School of Economics

Class – B.A. (VI)th sem.

Sub. — Macro Economics

Topic – ~~Supply~~ Types of Money

Unit – III

Teacher – Dr. Dharmendra Singh

है। इसके फलस्वरूप वस्तुओं के मूल्य बढ़ने लगते हैं। इससे सामान्य जनता, विशेषकर निश्चित व्यक्तियों को बहुत कष्ट होता है।

(II) मुद्रा के सामाजिक दोष—मुद्रा ने मनुष्य के सामाजिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित किया जिसका अनुमान निम्नलिखित तथ्यों से लग सकता है :

(1) प्रतिष्ठामूलक—अधिक मुद्रा का स्वामित्व समाज की प्रतिष्ठा तथा सम्मान का प्रतीक है। इस धारणा के कारण समाज में मूल्यों का असन्तुलन स्थापित हो गया क्योंकि धनी व्यक्ति की ईमानदारी, त्याग, श्रम, आदि में सबसे बड़ा समझा जाने लगा है। इस मान्यता से समाज की आधारशिला को धक्का लगा है।

(2) अधिकाधिक शोषण—मुद्रा के लोभ ने समाज में शोषण का एक विषम चक्र चलाया है। किसी प्रकार, किसी रीति से अथवा किसी क्षेत्र से अधिकाधिक मुद्रा प्राप्त की जाय, इस मान्यता ने कारखानों में मजदूरों तथा व्यावसायिक कार्यालयों में कर्मचारियों का शोषण (exploitation) किया है।

(3) शत्रुता—मुद्रा भाई-भाई में विरोध, मित्रों में शत्रुता और साथी सहयोगियों में मन-मुटाव बनती है। अनेक बार मुद्रा के लेन-देन को लेकर सुखी परिवार नष्ट हो जाते हैं और सामाजिक शान्ति भंग हो जाती है।

(III) मुद्रा के नैतिक दोष—आर्थिक एवं सामाजिक दोषों के अतिरिक्त मुद्रा ने समाज में अनेक दोष उत्पन्न कर दिए हैं। **मुद्रा एक अच्छा सेवक परन्तु बुरा स्वामी है** (Money is a good servant but bad master) और आजकल की मुद्रा ने मनुष्य पर स्वामित्व प्राप्त कर लिया है। वर्तमान में मुद्रा साध्य न होकर 'साध्य' बन चुकी है। कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, दहेज, वेश्यावृत्ति, आदि नैतिक दोष धन की लालसा ने ही उत्पन्न किये हैं। इस प्रकार मुद्रा मानव के नैतिक पतन का मुख्य कारण है।

मुद्रा का अन्त अथवा नियन्त्रण

मुद्रा के प्रयोग द्वारा अनेक बुराइयां इस आवश्यकता की ओर संकेत करती हैं कि इस प्रकार का अन्त क्यों न कर दिया जाय जो इतने दोषों के लिए उत्तरदायी है? वास्तव में, ऊपर लिखे के लिए मुद्रा को उत्तरदायी ठहराना उचित नहीं है क्योंकि मुद्रा तो एक जड़ पदार्थ है। इसका वाला मनुष्य यदि लोभी, हिंसक, अनुदार अथवा घटिया स्तर का है तो वह मुद्रा संग्रह करने और उसका दुरुपयोग करेगा। वास्तव में, **मुद्रा का अनुचित संग्रह सब रोगों की जड़ है।** अतः सरकार पर नियन्त्रण करना चाहिए।

नियन्त्रण क्यों और कैसे?

मुद्रा के संकेन्द्रण पर नियन्त्रण करने के अतिरिक्त **मुद्रा के मूल्य में कमी को रोकना भी** जिन देशों में मुद्रास्फीति बढ़ती चली जाती है, उनमें प्रायः मुद्रा के मूल्य में कमी तथा वस्तुओं की वृद्धि होने लगती है। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक विषमता (economic disparity) भी बढ़ जाती है जिसे रोकना बहुत आवश्यक है।

अतः मुद्रा का अन्त करने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है उस पर **नियन्त्रण** यह नियन्त्रण निम्न हो सकते हैं : (i) मुद्रा (या धन) का कुछेक व्यक्तियों के हाथों में संकेन्द्रण (centre) नहीं होने देना चाहिए। (ii) मुद्रा संग्रह की अनुचित प्रवृत्ति (undesirable tendency of money) को निरुत्साहित किया जाना चाहिए। (iii) मुद्रा का अनावश्यक प्रसार नहीं होने देना

मुद्रा का वर्गीकरण

[CLASSIFICATION OF MONEY]

समय-समय पर मुद्रा ने विविध स्वरूप ग्रहण किए हैं। मुद्रा के इन स्वरूपों को समझने के लिए मुद्रा के वर्गीकरण की आवश्यकता पड़ती है। मुद्रा के वर्गीकरण का अध्ययन इस दृष्टिकोण से किया कि इससे मुद्रा के महत्व एवं प्रकृति को समझने का अवसर मिलता है।

मुद्रा का वर्गीकरण कई तरह से किया गया है। **शैपिरो** ने मुद्रा को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है :

(1) प्रामाणिक सिक्के के रूप में मुद्रा। इन सिक्कों पर अंकित मूल्य तथा सिक्के में निहित कीमत बराबर होती है (Full-bodied Coin Money)।

(2) सांकेतिक सिक्के के रूप में मुद्रा (Token Coin Money)।
(3) प्रतिनिधि मुद्रा (पत्र मुद्रा) (Full-bodied Paper Money)।
(4) सांकेतिक पत्र मुद्रा (Token Paper Money)।

लकेट का वर्गीकरण इस प्रकार है :
(1) वस्तु मुद्रा (Commodity Money)।
(2) धातु मुद्रा (Metallic Money)।
(3) प्रतिनिधि मुद्रा (Representative Money)।
(4) आदेश मुद्रा या सांकेतिक मुद्रा (Fiat Money or Token Money)।
(5) जमा मुद्रा (Deposit Money)।

'A Treatise on Money' में कीन्स ने मुद्रा का निम्न वर्गीकरण प्रस्तुत किया है :

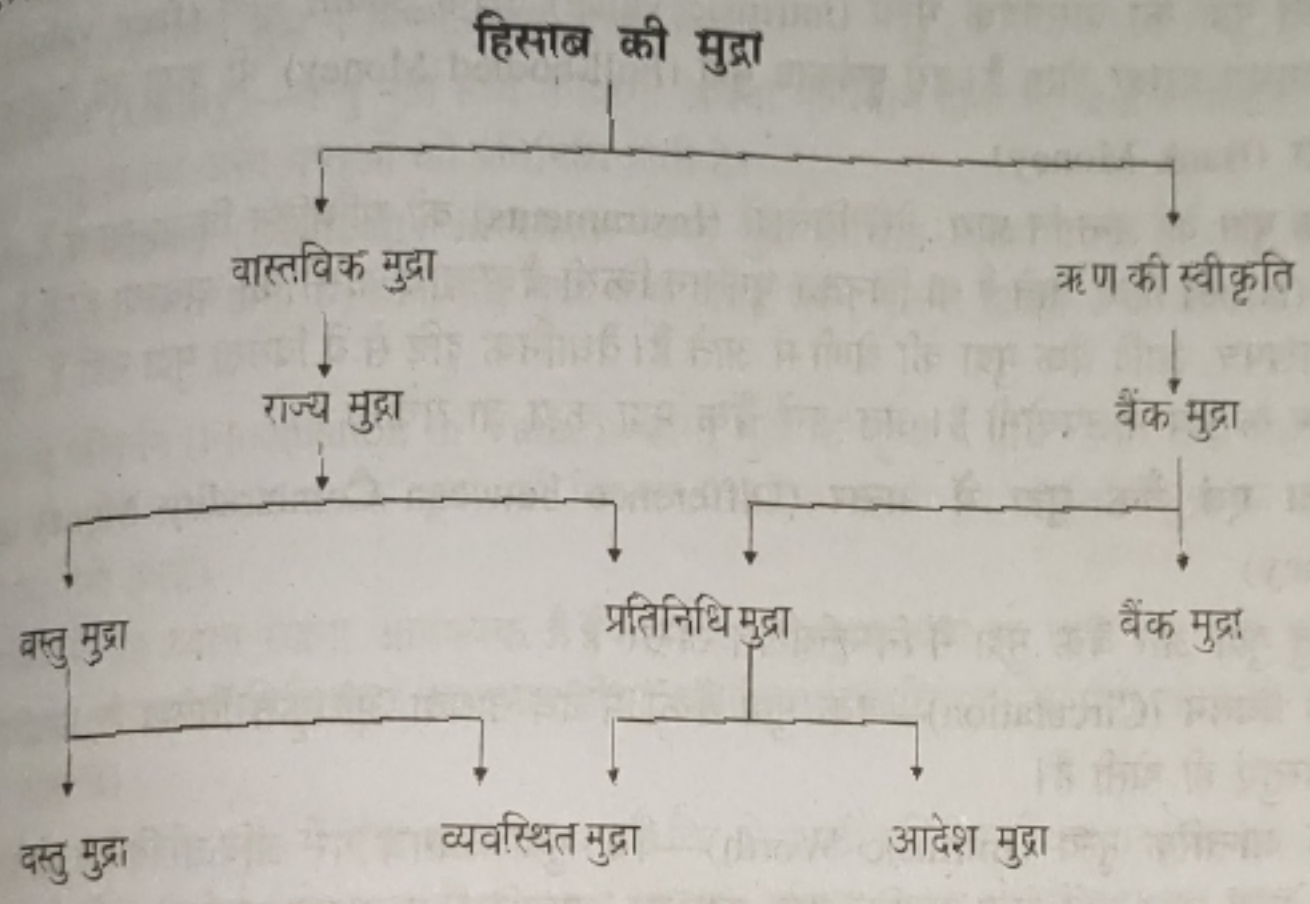

उपर्युक्त वर्गीकरणों के आधार पर निम्न प्रकार की मुद्राओं की विवेचना की गई है :

(1) हिसाब अथवा लेख की मुद्रा एवं वास्तविक मुद्रा
(MONEY OF ACCOUNT AND MONEY PROPER)

हिसाब की मुद्रा वह मुद्रा है जिसमें ऋण, कीमतों एवं सामान्य क्रय शक्ति को व्यक्त किया जाता है। इसी में सभी प्रकार के हिसाब रखे जाते हैं। इस प्रकार की मुद्रा का प्रायः स्थायी नाम होता है जैसे रुपया चलन की हिसाब की मुद्रा है, जबकि इसका स्वरूप अनेक बार बदल चुका है। इस तरह की मुद्रा को **बेन्हम** ने **'चलन की इकाई'** (Unit of Account) कहा है।

वास्तविक मुद्रा से तात्पर्य उस मुद्रा से है जो किसी देश में विनिमय-माध्यम तथा भुगतान के आधार के रूप में प्रचलित होती है और क्रय शक्ति का संचय करती है। **बेन्हम** ने इस तरह की मुद्रा को **'चलन की इकाई'** (Unit of Currency) तथा **सेलिगमैन** ने **'यथार्थ मुद्रा'** (Real Money) कहा है। चलन में विभिन्न प्रकार के सिक्के एवं करेन्सी नोट वास्तविक मुद्रा हैं।

प्रायः हिसाब की मुद्रा तथा वास्तविक मुद्रा एक ही होती है, परन्तु कई उदाहरण ऐसे भी हैं जब यह अलग भिन्न भी रही है। उदाहरण के लिए, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष विशेष आहरण अधिकार (SDR) का उपयोग मूल्य के मापक के रूप में करता है, यह हिसाब की मुद्रा है। परन्तु विनिमय के माध्यम के रूप में इसका उपयोग नहीं होता है। यह कार्य सम्बन्धित राष्ट्रों की मुद्राएं ही करती हैं।

(2) वस्तु मुद्रा तथा बैंक मुद्रा
(COMMODITY MONEY AND BANK MONEY)

वस्तु मुद्रा (Commodity Money)

वस्तु मुद्रा, कोई वस्तु होती है जो न केवल स्वयं उपयोगी तथा मूल्यवान होती है बल्कि वस्तुओं के लिए विनिमय का माध्यम भी होती है। लॉर्ड केन्स के अनुसार, वस्तु मुद्रा किसी सर्वत्र उपलब्ध वस्तु से बनी हुई इकाई है जिसे मुद्रा का कार्य करने के लिए चुना गया है। इसका अर्थ यह कोई भी ऐसी वस्तु **जो सरलता से पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो और जिसे जनता ने सुविधा की दृष्टि से दर्जा दे दिया हो, वस्तु मुद्रा कहलाती है।** इस प्रकार अन्न, तम्बाकू, खालें, मोती, मूंगा, सीप, कौड़ी, आदि मुद्रा की श्रेणी में सम्मिलित हो सकते हैं। अनेक देशों में स्वर्ण अथवा चांदी में बनी हुई धातु मुद्राएं हैं। इन्हें भी वस्तु मुद्रा की ही श्रेणी में रखा जाना चाहिए, क्योंकि सोना-चांदी भी वस्तुएं हैं और सुविधा की दृष्टि से सरकार द्वारा एक निश्चित आकार, प्रकार, रंग-रूप तथा वजन में उनका मुद्रण किया जाता है।

वस्तु मुद्रा का वास्तविक मूल्य (intrinsic value) उसके अंकित मूल्य (face value) के अथवा लगभग बराबर होता है। इसे **पूर्णकाय मुद्रा** (Full-bodied Money) भी कहा जा सकता है।

बैंक मुद्रा (Bank Money)

बैंक मुद्रा के अन्तर्गत प्रायः ऐसे विलेखों (Instruments) को सम्मिलित किया जाता है जो बैंक द्वारा निर्गमित (issue) किए जाते हैं या जिनका भुगतान किसी बैंक द्वारा करने की व्यवस्था होती है। बैंक ड्राफ्ट, साखपत्र, आदि बैंक मुद्रा की श्रेणी में आते हैं। वैधानिक दृष्टि से ये विलेख मुद्रा नहीं हैं, परन्तु विनिमय के माध्यम के रूप में उपयोगी हैं। अतः इन्हें बैंक मुद्रा कहा जा सकता है।

वस्तु मुद्रा एवं बैंक मुद्रा में अन्तर (Difference between Commodity Money and Bank Money)

वस्तु मुद्रा और बैंक मुद्रा में निम्नलिखित अन्तर हैं :

(1) **प्रचलन** (Circulation)—बैंक मुद्रा बैंकों में देय अथवा अधिकृत विलेख है, जबकि वस्तु मुद्रा प्रचलित वस्तुएं ही होती हैं।

(2) **आन्तरिक मूल्य** (Intrinsic Worth)—बैंक मुद्रा कागज पर अंकित विलेख होते हैं जिनका आन्तरिक मूल्य कुछ नहीं होता जबकि वस्तु मुद्रा का आन्तरिक मूल्य महत्वपूर्ण होता है, अर्थात् वस्तु मुद्रा मूल्यवान होती है।

(3) **आधार** (Base)—बैंक साखपत्र आदि बैंक में रकम जमा करने पर ही प्रयोग में लाए जा सकते हैं जबकि वस्तु मुद्रा स्वयं में पूर्ण होती है।

(4) **उपयोग में सरलता** (Convenience in Handling)—बैंक मुद्रा बहुत हल्की होती है, कम घेरती है, अधिक क्षेत्र में प्रचलित होती है तथा उसमें जोखिम कम होती है, जबकि वस्तु मुद्रा वजनदार है, अधिक जगह घेरती है, प्रायः कम क्षेत्र में प्रचलित होती है तथा उसके लाने-ले जाने में (विशेषतः सोने में) अधिक जोखिम होती है।

(5) **पृष्ठांकन** (Endorsement)—बैंक मुद्रा का भुगतान किसी अन्य व्यक्ति को दिलवाने के लिए बेचान करना पड़ता है वस्तु मुद्रा का नहीं।

(3) वस्तु मुद्रा और साख मुद्रा
(COMMODITY MONEY AND CREDIT MONEY)

कभी-कभी मुद्रा का वर्गीकरण वस्तु और साख मुद्रा के रूप में किया जाता है। साख मुद्रा और मुद्रा में केवल दर्जे या विस्तार का अन्तर है। साख मुद्रा में ऐसे सब विलेख सम्मिलित होते हैं जो बैंक व्यक्तियों पर लिखे जाते हैं। इस प्रकार बैंक मुद्रा में केवल साखपत्र, बैंक ड्राफ्ट, यात्री चेक, आदि सम्मिलित होते हैं जबकि साख मुद्रा में चेक, बिल, हुण्डी, प्रतिज्ञा-पत्र, आदि सभी सम्मिलित हैं।

साख मुद्रा की सापेक्षिक श्रेष्ठता (Comparative Superiority of Credit Money)

वस्तु मुद्रा की तुलना में साख मुद्रा अग्रलिखित दृष्टियों से उत्तम है :